दत्तात्रेय स्तोत्र (नारद पुराण)

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

दत्तात्रेय स्तोत्र (नारद पुराण)

प्रकार	स्तोत्र
देवता	भगवान दत्तात्रेय
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	वैष्णव
स्रोत	बृहत्स्तोत्ररत्नाकर — निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, 1912 — No. 91, printed pp. 213–214 (djvu 221–222)
आभार	पाठ: बृहत्स्तोत्ररत्नाकर (निर्णयसागर प्रेस, 1912), संस्कृत विकिस्रोत (CC BY-SA 4.0); मुद्रित पृष्ठों पर पढ़ा गया और विकिस्रोत प्रतिलिपि तथा गीता प्रेस मुद्रण से मिलाया गया। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Text in the public domain. OCR transcription of the 1912 Nirnaya Sagar print from Sanskrit Wikisource, CC BY-SA 4.0, rea

श्रीगणेशाय नमः ॥

śrīgaṇeśāya namaḥ ||

जटाधरं पांडुरंगं शूलहस्तं कृपानिधिम् ।

jaṭādharaṃ pāṃḍuraṃgaṃ śūlahastaṃ kṛpānidhim |

सर्वरोगहरं देवं दत्तात्रेयमहं भजे ॥ १ ॥

sarvarogaharaṃ devaṃ dattātreyamahaṃ bhaje || 1 ||

अस्य श्रीदत्तात्रेयस्तोत्रमंत्रस्य भगवान्नारद ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । श्रीदत्तः परमात्मा देवता । श्रीदत्तप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

asya śrīdattātreyastotramaṃtrasya bhagavānnārada ṛṣiḥ | anuṣṭup chaṃdaḥ | śrīdattaḥ paramātmā devatā | śrīdattaprītyarthe jape viniyogaḥ |

जगदुत्पत्तिकर्त्रे च स्थितिसंहारहेतवे ।

jagadutpattikartre ca sthitisaṃhārahetave |

भवपाशविमुक्ताय दत्तात्रेय नमोस्तु ते ॥ १ ॥

bhavapāśavimuktāya dattātreya namostu te || 1 ||

जराजन्मविनाशाय देहशुद्धिकराय च ।

jarājanmavināśāya dehaśuddhikarāya ca |

दिगंबर दयामूर्ते दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

digaṃbara dayāmūrte dattātreya namo'stu te || 2 ||

कर्पूरकांतिदेहाय ब्रह्ममूर्तिधराय च ।

karpūrakāṃtidehāya brahmamūrtidharāya ca |

वेदशास्त्रपरिज्ञाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

vedaśāstraparijñāya dattātreya namo'stu te || 3 ||

ह्रस्वदीर्घकृशस्थूलनामगोत्रविवर्जित ।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

hrasvadīrghakṛśasthūlanāmagotravivarjita |

पंचभूतैकदीप्ताय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥

paṃcabhūtaikadīptāya dattātreya namo'stu te || 4 ||

यज्ञभोक्त्रे च यज्ञाय यज्ञरूपधराय च ।

yajñabhoktre ca yajñāya yajñarūpadharāya ca |

यज्ञप्रियाय सिद्धाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥

yajñapriyāya siddhāya dattātreya namo'stu te || 5 ||

आदौ ब्रह्मा मध्ये विष्णुरंते देवः सदाशिवः ।

ādau brahmā madhye viṣṇuraṃte devaḥ sadāśivaḥ |

मूर्तित्रयस्वरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥

mūrtitrayasvarūpāya dattātreya namo'stu te || 6 ||

भोगालयाय भोगाय योगयोग्याय धारिणे ।

bhogālayāya bhogāya yogayogyāya dhāriṇe |

जितेंद्रियजितज्ञाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥

jiteṃdriyajitajñāya dattātreya namo'stu te || 7 ||

दिगंबराय दिव्याय दिव्यरूपधराय च ।

digaṃbarāya divyāya divyarūpadharāya ca |

सदोदितपरब्रह्म दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥

sadoditaparabrahma dattātreya namo'stu te || 8 ||

जंबूद्वीपे महाक्षेत्रे मातापुरनिवासिने ।

jaṃbūdvīpe mahākṣetre mātāpuranivāsine |

जयमान सतां देव दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥

jayamāna satāṃ deva dattātreya namo'stu te || 9 ||

भिक्षाटनं गृहे ग्रामे पात्रं हेममयं करे ।

bhikṣāṭanaṃ gṛhe grāme pātraṃ hemamayaṃ kare |

नानास्वादमयी भिक्षा दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ १० ॥

nānāsvādamayī bhikṣā dattātreya namo'stu te || 10 ||

ब्रह्मज्ञानमयी मुद्रा वस्त्रे चाकाशभूतले ।

brahmajñānamayī mudrā vastre cākāśabhūtale |

प्रज्ञानघनबोधाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ११ ॥

prajñānaghanabodhāya dattātreya namo'stu te || 11 ||

अवधूत सदानंद परब्रह्मस्वरूपिणे ।

avadhūta sadānaṃda parabrahmasvarūpiṇe |

विदेहदेहरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ १२ ॥

videhadeharūpāya dattātreya namo'stu te || 12 ||

सत्यरूप सदाचार सत्यधर्मपरायण ।

satyarūpa sadācāra satyadharmaparāyaṇa |

सत्याश्रय परोक्षाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ १३ ॥

satyāśraya parokṣāya dattātreya namo'stu te || 13 ||

शूलहस्त गदापाणे वनमालासुकंधर ।

śūlahasta gadāpāṇe vanamālāsukaṃdhara |

यज्ञसूत्रधर ब्रह्मन् दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ १४ ॥

yajñasūtradhara brahman dattātreya namo'stu te || 14 ||

क्षराक्षरस्वरूपाय परात्परतराय च ।

kṣarākṣarasvarūpāya parātparatarāya ca |

दत्तमुक्तिपरस्तोत्र दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥

dattamuktiparastotra dattātreya namo'stu te || 15 ||

दत्तविद्याढ्य लक्ष्मीश दत्तस्वात्मस्वरूपिणे ।

dattavidyāḍhya lakṣmīśa dattasvātmasvarūpiṇe |

गुणनिर्गुणरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ १६ ॥

guṇanirguṇarūpāya dattātreya namo'stu te || 16 ||

शत्रुनाशकरं स्तोत्रं ज्ञानविज्ञानदायकम् ।

śatrunāśakaraṃ stotraṃ jñānavijñānadāyakam |

सर्वपापं शमं याति दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ १७ ॥

sarvapāpaṃ śamaṃ yāti dattātreya namo'stu te || 17 ||

इदं स्तोत्रं महद्दिव्यं दत्तप्रत्यक्षकारकम् ।

idaṃ stotraṃ mahaddivyaṃ dattapratyakṣakārakam |

दत्तात्रेयप्रसादाच्च नारदेन प्रकीर्तितम् ॥ १८ ॥

dattātreyaprasādācca nāradena prakīrtitam || 18 ||

इति श्रीनारदपुराणे नारदविरचितं दत्तात्रेयस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

iti śrīnāradapurāṇe nāradaviracitaṃ dattātreyastotraṃ saṃpūrṇam ||

अर्थ

संक्षिप्त भावार्थ, अनुवाद नहीं। जटाधारी, पाण्डुर-वर्ण, हाथ में त्रिशूल, कृपानिधि, सर्वरोगहर दत्तात्रेय को मैं भजता हूँ। हे दत्तात्रेय, आपको नमस्कार: जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और संहार के कारण, भवपाश से मुक्त; जरा-जन्म के नाशक, देह-शुद्धि करने वाले, दिगम्बर दयामूर्ति; कर्पूर-कान्ति, ब्रह्म-मूर्तिधारी, वेद-शास्त्र-ज्ञाता; छोटे-बड़े, कृश-स्थूल, नाम-गोत्र से परे, पंचभूतों में दीप्त; यज्ञ के भोक्ता, यज्ञरूप, यज्ञप्रिय; आदि में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु, अन्त में सदाशिव — त्रिमूर्ति; भोग के आलय और योग के स्वामी, जितेन्द्रिय; दिगम्बर, दिव्य, सदोदित परब्रह्म; जम्बूद्वीप के मातापुर-निवासी; घर-घर, गाँव-गाँव स्वर्ण-पात्र से नाना-स्वाद की भिक्षा लेने वाले; ब्रह्मज्ञान की मुद्रा, आकाश का वस्त्र; अवधूत, सदानन्द, विदेह; सत्यरूप, सदाचारी; शूल-गदाधारी, वनमाला और यज्ञोपवीत वाले; क्षर-अक्षर से परे; सगुण और निर्गुण। अन्तिम श्लोकों के अनुसार दत्तात्रेय की कृपा से नारद द्वारा कहा गया यह स्तोत्र परम्परा में शत्रु और पाप-नाश, ज्ञान-विज्ञान और दत्त-साक्षात्कार के लिए पढ़ा जाता है।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।